# अध्याय–4

## प्राचीन भारतीय मुद्रा प्रणाली के विदेशी तत्व

भारत में जब से विदेशी परम्पराओं के सिक्के हिन्द–यवन, शक, पह्लव, कुषाण तथा रोमन सिक्कों के रूप में प्राप्त होने लगते हैं, तब से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि विदेशी परम्परा के अन्तर्गत सिक्का चलवाना राजा का विशेषाधिकार था, उस पर उसका नाम, उसकी उपाधि और अधिकांशतः उसका चित्र भी अंकित होना अनिवार्य था। पश्चिमी भारत के शक नरेशों के सिक्कों पर तो उनकी तिथियों का भी अंकन मिलता है। यह एक ऐसी परम्परा थी जिसका अनुशरण चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय से गुप्त शासकों ने भी किया। उन्नीसवीं शताब्दी ई. के प्रारम्भ में कर्नल टाड, जनरल वेटुँरा, बर्न्स जैसे पुरातत्ववेन्ताओं ने हिन्द–यवन, शक, पह्लव तथा कुषाण शासकों के सिक्के एकत्र किये, जिनमें एक ओर यूनानी तथा दूसरी ओर खरोष्ठी लिपि में लेख अंकित थे। सबसे पहले मेसन यूनानी तथा खरोष्ठी अक्षरों का तुलनात्मक अध्ययन करके मिनेण्डर, अपोलोडोटस, हरमेयस शासकों के नाम एवं बेसिलिओस तथा सोंटेरस जैसी उपाधियों के अक्षरों को पढ़ा। ईरानी सिग्लोई पर भी खरोष्ठी लिपि के अक्षर मिले हैं, जिसका समय चौथी शताब्दी ई.पू. माना जा सकता है। सिग्लोई भारतीय निर्माण विधि से तैयार किये जाते थे[1]।

## हिन्द–यवन मुद्रायेंः–

मौर्योत्तर कालीन भारत पर विदेशी आक्रमणों की श्रृंखला में सर्वप्रथम बैक्ट्रियन ग्रीक शासकों का नाम आता है जिन्हें प्राचीन ग्रन्थों में यवन कहा गया है। हिन्दुकुश पर्वत व आक्सस के मध्य बैक्ट्रिया अत्याधिक उपजाऊ प्रदेश था, जिसे स्ट्रैबो ने "आरियाना का गौरव" कहा है। बैक्ट्रिया में यूनानी बस्ती का प्रारम्भ एकेमेनिड काल में हुआ, जिसका समय पाँचवी शताब्दी ई.पू. था। इस क्रम में सिकन्दर, सेल्युकस एण्टियोकस प्रथम का नाम लिया जा सकता है, जिन्होंने बैक्ट्रिया क्षेत्र को शासित किया। एण्टयोकस प्रथम के क्षत्रप डायोडोटस ने विद्रोह करके स्वतन्त्र बैक्ट्रिया राज्य की स्थापना की। डेमेट्रियस जिसका समय 220 ई. पू से 175 ई. पू. के मध्य था, ने 183 ई. पू. सिन्ध व पंजाब पर अधिकार करके भारत में हिन्द–यवन राज्य की स्थापना की। उसने साकल को राजधानी बनाकर यूनानी व खरोष्ठी लिपि में लेखांकित सिक्के जारी किये। कालान्तर में हिन्द–यवन साम्राज्य दो कुलों, डेमेट्रियस तथा यूक्रेटाइडीज में बट गया। यूक्रेटाइडीज ने तक्षशिला को राजधानी बनाया। मिनेण्डर जिसका शासन काल 160 ई. पू. से 120 ई. पू. के मध्य था, डेमेट्रियस कुल से था। इसने साकल को राजधानी बनाया, जो शिक्षा में पाटलिपुत्र के समकक्ष थी। इसके सिक्के भड़ौच में मिले **हैं। इसकी कांस्य मुद्राओं पर धर्मचक्र का अंकन मिलता है। उल्लेखनीय है कि मिनाण्डर ने** बौद्धभिक्षु नागसेन से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था। हरमेयस यूक्रेटाइडीज वंश का अन्तिम हिन्द–यवन शासक था, जिसका राज्य ऊपरी काबुल घाटी तक सीमित था। इसने 50 ई. पू. से 30 ई. पू. के मध्य शासन किया। वस्तुतः हरमेयस के ही समय पश्चिमोत्तर भारत से यवनों का लगभग दो सौ वर्षो का शासन समाप्त हो गया।

हिन्द–यवन शासकों ने सोने, चाँदी तथा ताँबे के सिक्के जारी किये। डेमेट्रियस द्वितीय के पहले द्विलिपि सिक्कों का प्रचलन नहीं था। द्विलिपि सिक्कों की परम्परा डेमेट्रियस द्वितीय से प्रारम्भ होती है, जिसके अन्तर्गत यूनानी तथा खरोष्ठी दोनों लिपियों में मुद्रायें लेखांकित की गयीं। यद्यपि पेण्टालिओन, अगाथोक्लीज के सिक्के इसके अपवाद है, जिनके अग्रभाग पर ब्राह्मी लिपि में तथा पृष्ठभाग पर यूनानी लिपि में लेखांकन प्राप्त होता है। हिन्द–यवन शासकों की मुद्राओं के अग्रभाग पर अत्यन्त स्पष्ट राजा की आवक्ष आकृति चित्रांकित है। पृष्टभाग पर किसी देवी या देवता की आकृति का अंकन या उनके किसी पवित्र चिह्न का अंकन यूनानी व खरोष्टी लिपि में प्राप्त होता है[2]। इन सिक्कों पर जियस, हेराक्लीज, अपोलो, पोसीडन, डियोस्कारोइ जैसे देवता तथा पल्लस, निके, आर्तमीज आदि देवियों का अंकन मिलता है। इसके अतिरिक्त स्तूप, कैडुकस, पिलोइ (अण्डाकार टोपी) ट्राईपाड, लिबिस (अपोलो देवता का विशेष चिह्न) आदि का भी अंकन प्राप्त होता है। शासकों का नाम व उपाधियाँ सिक्कों के अग्रभाग पर यूनानी लिपि में तथा पृष्ठभाग पर देवी देवताओं व अन्य का अंकन खरोष्ठी लिपि में लेखांकन के साथ मिलता है। यूनानी लिपि में बेसिलिओस, निकेफराउ, स्ट्रेटोनास मेगालाउ, एनिकेटाउ, रोटेरोस, डिकाइसो और खरोष्ठी लिपि में त्रतस, अपडिहसत, जयधरस, महरजस, त्रतरस, ध्रमिकस आदि लेखांकित है। सामान्यतया इन सिक्कों पर यूनानी अक्षरों से बने मोनोग्राम भी मिलते हैं। कुछ हिन्द–यवन सिक्कों पर राजाओं के युगलचित्र भी प्राप्त होते हैं जैसे स्ट्रेटो व एगाथोक्लिया के अंकन आदि। यह युगल चित्राकंन सम्मिलित शासन की ओर संकेत करते हैं।

डायोडोटस, जिसके शासन का प्रारम्भ लगभग 245 ई. पू. माना गया है, के सिक्कों के अग्रभाग पर मुकुट धारण किये राजा की आवक्ष आकृति का अंकन मिलता है। पृष्ठभाग पर जियस का चित्रांकन है, जिसके बांयें हाथ में ढाल है तथा दाहिने हाथ से वज्र फेंकता हुआ दर्शाया गया है और पैर के पास बाज की आकृति बनी है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओस

डायोडोटाउ" लेखांकित है।[3] इसकी कुछ मुद्राओं के अग्रभाग पर राजा मेसीडोनियन टोपी कौसिया धारण किये हुए दर्शाया गया है। पृष्ठभाग पर देवी पल्लस का चित्रांकन है जिसके दाहिने हाथ में भाला है और भूमि में छोटी ढाल रखी है।[4] डायोडोटस के उपरान्त यूथीडेमस प्रथम शासक बना, जिसका शासन लगभग 220 ई. पू. में प्रारम्भ हुआ। यूथीडेमस द्वारा जारी मुद्राओं के अग्रभाग पर मुकुट धारण किये हुए राजा का चित्रांकन है। पृष्ठभाग पर नग्न हेराक्लीज का चित्रांकन है, जो दाहिने हाथ में मुग्दर लिए चट्टान पर बैठा है।[5] जबकि कुछ सिक्कों पर हेराक्लीज सिंह–चर्म बिछी चट्टान पर बैठा है।[6] यूनानी लिपि में "बेसिलिओस यूथीडिमाऊ" लेखांकित है। इसी शासक की कुछ ताम्रमुद्राओं के अग्रभाग पर दाढ़ीयुक्त हेराक्लीज का चित्रांकन है। डेमेट्रियस के सिक्को के अग्रभाग पर मुकुट व हाथी का शिरोवल्क धारण किये राजा की आवक्ष आकृति चित्रांकित है। पृष्ठभाग पर नग्न हेराक्लीज का अंकन है, जो मुकुट धारण किए हुए है तथा हाथ में मुग्दर व सिंह–चर्म लिए खड़ा है। यूनानी लिपि मे "बेसिलिओस डेमेट्रियाउ" लेखांकित है।[7] कुछ सिक्कों के अग्रभाग पर सिर में सिरपेंचे की लता की माला धारण किये दाढ़ी युक्त हेराक्लीज का अंकन है। पृष्ठभाग पर देवी आर्तमीज का चित्रांकन है, जिनके बांयें हाथ में धनुष दर्शाया गया है तथा दाहिने हाथ से पीठ में बंधे तरकस से बाण निकाल रही है।[8] यूथीडेमस द्वितीय द्वारा जारी मुद्राओं के अग्रभाग पर मुकुट धारण किये राजा की आवक्ष आकृति का अंकन है। पृष्ठभाग पर सिरपेंचे की लता का मुकुट धारण किये हेराक्लीज दाहिने हाथ में फूलों की माला तथा बायें हाथ में सिंह–चर्म व मुग्दर लिये खड़ा है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओस यूथीडेमाउ" लेखांकित है।[9] इसी शासक के कुछ सिक्कों के अग्रभाग पर लारेल पत्रों से सुसज्जित अपोलो का सिर तथा पृष्ठभाग पर ट्राईपाडलिबिस[10], जो अपोलो का विशेष चिह्न है, का अंकन मिलता है। एण्टिमेकस थियोस द्वारा जारी मुद्राओं के अग्रभाग पर मुकुट और कौसिया धारण किये राजा का आवक्ष चित्रण है। पृष्ठभाग पर पोसीडन का अंकन है, जिसके दाहिने हाथ में त्रिशूल तथा बायें हाथ में फीते से

बंधा ताड़पत्र है। यूनानी लिपि में बेसिलिओस एण्टिमेकाउ लेखांकित है।[11] कुछ अन्य सिक्कों के अग्रभाग पर हाथी तथा पृष्ठभाग पर पंखयुक्त खड़ी हुई देवी निके का अंकन है। एण्टिमेकस ने डायोडोटस प्रथम तथा यूथीडेमस की स्मृति में भी सिक्के जारी किये। डेमेट्रियस ने अपने शासन काल में जो सिक्के जारी किये उनके अग्रभाग पर मुकुटधारी राजा की आवक्ष आकृति का चित्रांकन है। पृष्ठभाग पर माला तथा ढाल लिये पल्लस की आकृति है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओस डेमेट्रियाउ" लेखांकित है।[12] डेमेट्रियस के ही कुछ अन्य सिक्कों पर मुकुट व कैशिया धारण किये राजा का अंकन है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओस एनिकेटाउ डेमेट्रिआउ" लेखांकित है। पृष्ठभाग पर ब्रज फेंकता हुआ राजदण्ड लिए जियस का चित्रांकन है। खरोष्ठी लिपि मे "महरजस अपडिहतस दिमेत्रियस" लेखांकित है। कुछ सिक्कों पर पंखयुक्त वज्रकांन है तथा कुछ पर सूड़ उठाये हाथी का सिर है, जिसके गले में घण्टी का अंकन मिलता है। हिन्द–यवन शासकों के सिक्कों के अग्रभाग पर मुकुटधारी राजा की अवक्ष आकृति चित्रांकित मिलती है इसलिए इस अंकन का उल्लेख बार–बार आवश्यक नहीं है। पेण्टालिओन[13] की मुद्राओं के पृष्ठभाग पर बैठा हुआ जियस चित्रांकित है, जिसके बांयें हाथ में राजदण्ड दाहिने हाथ में त्रिमुखी हैकेट है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओस पेण्टालिओटोस" लेखांकित है। एगाथोक्लीज द्वारा जारी मुद्राओं के पृष्ठभाग तथा अग्रभाग का चित्रांकन भी पेण्टालिओन के सिक्कों की तरह है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओस एगाथोक्लीआउस" लेखांकित है।[14] इसी शासक के अन्य सिक्कों के अग्रभाग पर माला धारण किये हुए बांयें कन्धे पर भाला रखे डायोनियस की आकृति चित्रांकित है। पृष्ठभाग पर तेन्दुआ पंजे उठाकर अंगूर की बेल को छू रहा है।[15] एगाथोक्लीज ने सिकन्दर की स्मृति वाले सिक्के भी जारी किये, जिसके अग्रभाग पर सिंह शिरोवल्क धारण किये हुए सिकन्दर का सिर चित्रांकित है। पृष्ठभाग पर बाज के साथ जियस सिंहासनारूढ़ है, साथ ही लम्बे राजदण्ड का भी अंकन है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओण्टोस डिकाइओं एगोथोक्लीआउस"

लेखांकित है।[16] यूक्रेटाइडीज ने जो मुद्रायें जारी की उनके पृष्ठभाग के अंकन में भिन्नता थी जैसे कुछ सिक्कों पर ताड़पत्र लिये डियोस्कोरोइ भाले के साथ आक्रमण मुद्रा में चित्रांकित है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओस मेगालाउयूक्रेटिडाउ" लेखांकित है।[17] कुछ सिक्कों पर इसी लेखांकन के साथ दो ताड़वृक्ष के साथ पिलोइ का चित्रांकन मिलता है।[18] कुछ अन्य सिक्कों पर माला व ताड़पत्र लिए निके चित्रांकित हैं[19] अथवा माला व ताड़पत्र के साथ सिंहासनारूढ़ जियस को दर्शाया गया है। यूक्रेटाइडीज के कुछ अन्य सिक्कों पर स्त्री–पुरूष का संयुक्तांकन प्राप्त होता है और यूनानी लिपि में "हेलियोक्लियाय" व "काथलिओडिकेस" लेखांकित है। पृष्ठभाग पर "बेसिलिओस मेगालाउ यूक्रेटिडाउ" लेख के साथ मुकुट धारण किये यूक्रेटाइडीज की आवक्ष आकृति का अंकन किया गया है। कनिंघम तथा गार्डनर स्त्री–पुरूष के संयुक्तांकन को यूक्रेटाइडीज के माता–पिता होने की सम्भावना व्यक्त करते हैं। हेलियोक्लीज के समस्त सिक्कों के अग्रभाग पर यूनानी लिपि में "बेसिलिओस डिकाइओं हेलियोक्लिउस" तथा पृष्ठभाग पर महरजस धमिकस हेलियक्रियस" लेख समान रूप से मिलता है।[20] इन सिक्कों के पृष्ठभाग पर वज्र व राजदण्ड के साथ जियस[21], चलता हुआ घोड़ा या खड़ा हुआ हाथी, कूबड़दार बैल आदि का चित्रांकन मिलता है। लिसियस द्वारा जारी सिक्कों क पृष्ठभाग पर मुकुट धारण करता हुआ हेराक्लीज का चित्रांकन है, जिसके बांयें हाथ में मुग्दर, सिंह–चर्म तथा ताड़पत्र दर्शाया गया है। खरोष्ठी लिपि में "महरजस अपडिहतस लिसियस" लेखांकित है।[22] एण्टिआल्किडस की मुद्राओं के अग्रभाग पर राजा मुकुट व कैसिया या मुकुट व शिरस्त्राण या केवल मुकुट धारण किये दर्शाया गया है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओस निकेफराउ एण्टियोलकिडाउ" लेखांकित है। पृष्ठभाग पर सिंहासनारूढ़ जियस का चित्रांकन है, जिसके बांयें हाथ में राजदण्ड व दाहिने हाथ में माला दर्शाया गया है, साथ ही ताड़पत्र लिये निके का भी चित्रांकन है। खरोष्ठी लिपि में "महरजस जयधरस अन्तियलिकितस" लेख अंकित किया गया है।[23] कुछ सिक्कों के पृष्ठभाग में गले में

घण्टी धारण किये हाथी निके के हाथ से माला छीनने के लिए बढ़ रहा है।[24] डायोमिडीज, अपोलोडोटस, फिलोक्लीजनोस, स्ट्रेटो आदि की मुद्रायें भी उपरोक्त मुद्राओं की भाँति हैं। प्रसिद्ध हिन्द–यवन शासक मिनेण्डर द्वारा जारी मुद्राओं के अग्रभाग पर राजा मुकुट या शिरस्त्राण धारण किये दाहिने हाथ से भाला फेंकते हुए या संतुलित भाला लिए हुए चित्रांकित है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओस सोटेरस मिनेण्डराउ" लेखांकित है। पृष्ठभाग पर देवी पल्लस का चित्रांकन वज्र व ढाल के साथ किया गया है। खरोष्ठी लिपि में "महरजस त्रतरस मिनेण्दरस" लेखांकित है।[25] इसके अन्य सिक्कों के अग्रभाग पर शिरस्त्राण धारण किये देवी पल्लस की आकृति का अंकन है, पृष्ठभाग पर "उल्लू" का चित्रांकन है।[26] कुछ सिक्कों के अग्रभाग पर बैल का सिर या घण्टी युक्त हाथी का सिर, पृष्ठभाग पर ट्राईपाड लिबिस या हेराक्लीज की गदा का अंकन है।[27] समस्त सिक्कों के लेख एक ही समान हैं। लेकिन अर्टिमिडोरोस की मुद्राओं पर राजा की उपाधि लेखांकित नहीं मिलती जबकि पृष्ठभाग पर खरोष्ठी में लेख के साथ तीर चलाती आर्तमीज का चित्रण है, जिसकी पीठ पर तरकस बँधा हुआ दर्शाया गया है।[28] हिप्पोस्ट्रेटस की मुद्राओं का अग्रभाग भी अर्टिमिडोरोस की मुद्राओं के अग्रभाग की तरह है। लेकिन पृष्ठभाग पर कार्नकोपिया लिये नगर देवी का अंकन अथवा योद्धा के वेश में राजा का अंकन है।[29]

हिन्द–यवन शासकों की श्रंखला में हरमेयस अन्तिम महत्वपूर्ण शासक था। हरमेयस ने जो मुद्रायें जारी कीं उनके अग्रभाग पर उपाधि सहित मुकुटधारी राजा की आवक्ष आकृति का अंकन मिलता है। पृष्ठभाग पर सिंहासनारूढ़ जियस का चित्रांकन है, जिसके बांयें हाथ में लम्बा राजदण्ड व दाहिनी भुजा बाहर निकाले दर्शाया गया है।[30] कुछ अन्य सिक्कों के अग्रभाग पर मुकुटधारी राजा–रानी की संयुक्त आवक्ष आकृति चित्रांकित है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओस सोटेरोस अर्मियस केलिओपीस" लेखांकित है। पृष्ठभाग पर शस्त्रों से सुसज्जित राजा घोड़े पर सवार दर्शाया गया है। खरोष्ठी लिपि में "महरजस त्रतरस हर्मियस कलियपय"[31] लेखांकित है।

एक अन्य सिक्के में "कुजुल कसस कुषन यवुगस ध्रमिस्थिदस" का अंकन है। हरमेयस के इन सिक्कों का समय प्रथम शताब्दी ई. था। रैप्सन का मानना है कि कुषाण नरेश कुजुल कडफिसेस ने यूनानी राज्य का अन्त कर दिया। हरमेयस के सिक्कों पर उपाधि तथा कुजुल कडफिसेस के साथ हरमेयस का लखोंकन मिलता है। अल्टेकर का कहना है कि कडफिसेस ने पहले हरमेयस के साथ मिलकर शासन किया, इसी कारण दोनों का नाम एक साथ मिलता है। उल्लेखनीय है कि यूनानी शासकों द्वारा जारी सिक्कों के दोनों ओर यूनानी तथा खरोष्ठी में लेख मिलते हैं। जिन सिक्कों के अग्रभाग पर यूनानी लिपि तथा पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि में लेख है, उन सिक्कों को भारतीय माना गया है। ऐसा माना जाता है कि इनके एकभाषिक सिक्के बख्त्री क्षेत्र के लिए तथा द्विभाषिक सिक्के भारतीय क्षेत्र विशेष के लिए जारी किये गये, जहाँ खरोष्ठी लिपि का प्रचलन था। उल्लेखनीय है कि पश्चिमोत्तर भारत में खरोष्ठी लिपि का प्रचलन था तभी अशोक ने मानसेहरा तथा शहबाजगढ़ी के अभिलेखों को खरोष्ठी लिपि में उत्कीर्ण करवाया था।

## भारतीय शक मुद्रायें :—

शक मध्य एशिया के खाना बदोशी कबीलों के बर्बर लोग थे। चीनी ग्रन्थों से पता चलता है कि यू—ची नामक एक अन्य जाति ने शकों को पराजित करके वहाँ से भगा दिया। शकों ने भाग कर बैक्ट्रिया पर अधिकार कर लिया। जब यू—ची जाति ने शकों को बैक्ट्रिया से भी खदेड़ दिया तब यह दो शाखाओं में बँट गये। एक शाखा कपिशा चली गयी तथा दूसरी शाखा ईरान चली गयी। जब ईरान के शासक मिथ्रदात (123 ई.पू. से 88 ई.पू.) ने पूर्वी ईरान से शकों को भगा दिया तो वे दक्षिणी अफगानिस्तान में सीस्तान (शकस्थान) में बस गये। यहाँ से कान्धार व बोलन दर्रे होते हुए वे सिन्धुघाटी पहुँच गये, इसलिए सिन्धुघाटी को "शकद्वीप" भी कहा गया। शकों ने पश्चिमोत्तर भारत से हिन्द—यवन सत्ता समाप्त करते हुए तक्षशिला, मथुरा, महाराष्ट्र,

उज्जैनी आदि स्थानों पर सत्ता स्थापित कर ली। चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा पूर्णतया उन्मूलित होने के पूर्व तक भारतीय प्रान्तों पर इनका शासन चलता रहा। शक शासकों ने चाँदी व ताँबें के गोल व चौकोर सिक्के जारी किया। हिन्द–यवन राजाओं की भाँति उन्होंने सोने के सिक्के प्रचलित नहीं किये।

तक्षशिला के प्रथम शक क्षत्रप के रूप में मोयस अथवा मोग ने 20–22 ई.पू. के लगभग गान्धार में प्रथम शक राज्य की स्थापना की। इसने लगभग बीस प्रकार की मुद्रायें जारी कीं। प्रथम शैली के सिक्कों के अग्रभाग पर बिन्दु के घेरे में सूड़ ऊपर किये हाथी का सिर है, जिसके गले में घण्टी का अंकन मिलता है। सिक्के का यह भाग लेखरहित है। पृष्ठभाग पर कडुकस के साथ यूनानी लिपि में "बेसिलिओन मेगालाउ" लेखांकित है।[32] अन्य सिक्कों के अग्र भाग पर जियस का अंकन है, जो लम्बा राजदण्ड लिए दाहिना हाथ बाहर निकाले दर्शाया गया है। यूनानी लिपि मे "बेसिलिओस बेसिलिओन मेगालाउ माओउ" लेखांकित है। पृष्ठभाग पर पंखयुक्त निके का चित्रांकन है, जो माला तथा ताड़पत्र लिये हैं।[33] इसी शासक के अन्य प्रकार के सिक्कों के अग्रभाग पर हाथ में लम्बा त्रिशूल लिए पोडीडन का अंकन मिलता है जिसके नीचे नदी देवता को दर्शाया गया है। यूनानी लेख पूर्ववत है। पृष्ठभाग पर वृक्ष के नीचे खड़ी नारी की आकृति है, खरोष्ठी लिपि में "रज तिरजस महतस मोउस" लेखांकित है।[34] मोयस के उपरान्त मुद्राओं पर एजेस प्रथम का नामोल्लेख मिलता है। इसकी मुद्राओं पर भी यूनानी अनुकरण की स्पष्ट झलक मिलती है। एजेस प्रथम की मुद्राओं पर भी जियस, निके, पोसीडन, राजा, राजदण्ड आदि अंकन के साथ यूनानी व खरोष्ठी में लेखांकन प्राप्त होता है। उल्लेखनीय है कि इसकी मुद्राओं पर ऊँट, बैल या याक, सिंह का चित्रांकन है। एजिलिसेस की मुद्रायें भी मोयस व एजेस की मुद्राओं की ही भाँति हैं। शकों ने लगभग प्रथम शताब्दी ई.पू. में मथुरा पर अधिकार कर लिया। मथुरा का प्रथम शक महाक्षत्रप रज्जुबुल था[35] इसके सिक्के सिन्धुघाटी से लेकर गंगा के दोआब तक प्राप्त

हुए हैं। सिक्कों की प्राप्ति स्थलों से ऐसा निष्कर्ष निकलता है कि रज्जुबुल का अधिकार पूर्वी पंजाब से लेकर मथुरा तक था।[36] इसकी पंजाब से प्राप्त मुद्रायें स्ट्रेटो तथा मोयस के सिक्कों से प्रभावित थीं। मथुरा से प्राप्त होने वाली मुद्राओं पर स्थानीय मुद्रा का प्रभाव दिखायी पड़ता है। रज्जुबुल के उपरान्त उसका पुत्र शोडास[37] क्षत्रप व महाक्षत्रप हुआ, जिसकी मुद्राओं पर "महाक्षत्रप पुत्र क्षत्रप" "रज्जुबुल पुत्र क्षत्रप" तथा "महाक्षत्रप" आदि का लेखांकन मिलता है।

पश्चिमी भारत में दो शक वंश थे प्रथम क्षहरात वंश और दूसरा कार्दमक वंश।[38] क्षहरात वंशीय शासकों का शासन क्षेत्र सम्पूर्ण महाराष्ट्र, लाट व सुराष्ट्र प्रदेश के अन्तर्गत था। इस वंश क संस्थापक भूमक था, इसकी मुद्रायें गुजरात, काठियावाड़, मालवा तथा अजमेर से प्राप्त हुई हैं। भूमक के सिक्कों के अग्रभाग पर वज्र, बाण तथा खरोष्ठी व प्राकृत भाषा में "क्षहरतस क्षत्रप भूमकस" लेखांकित है।[39] पृष्ठभाग पर सिंह, धर्मचक्र, स्तम्भ का चित्रांकन मिलता है। ब्राह्मी लिपि में लेख अंकित है, जो पठनीय नहीं है। पश्चिमी राजस्थान, सिन्धु के उन क्षेत्रों पर भूमक का अधिकार था, जो खरोष्ठी लिपि के प्रचलन क्षेत्र में आते थे। इसी प्रकार भूमक के ब्राह्मी लिपि में लेखांकित सिक्के मालवा, सौराष्ट्र तथा गुजरात से प्राप्त हुए हैं, जहाँ ब्राह्मी लिपि का प्रचलन थ। क्षहरात वंशीय शासक नहपान द्वारा जारी मुद्रायें भी महत्वपूर्ण हैं। रैप्सन ने नहपान के सिक्कों के विषय में कहा है कि भूमक की मुद्राओं के अग्रभाग का अनुकरण नहपान के सिक्कों के पृष्ठभाग पर मिलता है। नहपान ने अपने सिक्कों पर "राजा" उपाधि का अंकन भी किया है, लेकिन इन सिक्कों पर भी तिथि का उल्लेख नहीं मिलता है। जोगलथम्बी से नहपान के 14000 सिक्के प्राप्त हुए हैं, इनमें से 9270 सिक्के ऐसे हैं जिन्हें सातवाहन शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी ने पुनरांकित करवाये हैं। उल्लेखनीय है कि गौतमीपुत्र शातकर्णी ने नहपान को पराजित करके मार डाला था। नहपान के सिक्कों के पृष्ठभाग पर वाण, वज्र के चित्रांकन के साथ ब्राह्मी लिपि में "राजा क्षहरतस नहपानस" व खरोष्टी लिपि में "राज्ञो क्षहरतस नहपानस" लेखांकित है।[40] क्षहरात

वंश के पश्चात सुराष्ट्र तथा मालवा में कार्दमक वंश की स्थापना हुई जिसका पहला शासक चष्टन था।[41] चष्टन द्वारा जारी सिक्कों के अग्रभाग पर राजा की आवक्ष आकृति के साथ यूनानी लिपि में लेखांकन प्राप्त होता है। पृष्ठभाग पर चैत्य, तारे, चन्द्र के अंकन के साथ ब्राह्मी लिपि में "राज्ञो महाक्षत्रस धसमोतिक पुत्रस चष्टन" तथा खरोष्ठी लिपि में "चष्टनस" लेखांकित है।[42] चष्टन के उपरान्त जयदामन नामक क्षत्रप हुआ, इसके सिक्कों पर "स्वामिन" उपाधि लेखांकित है। कुछ सिक्कों पर "यदम" लेखांकन के साथ हाथी तथा उज्जैनी चिह्न का भी अंकन प्राप्त होता है। चष्टन के पौत्र "महाक्षत्रप रूद्रदामन" की मुद्रायें चष्टन की ही भाँति हैं। इसकी मुद्राओं पर खरोष्ठी लिपि के स्थान पर ब्राह्मी लिपि में "राज्ञो क्षत्रपस जय दाम्पुतस राज्ञो महाक्षत्रपस रूद्रामनस"[43] लेख मिलता है। रूद्रदामन के उपरान्त "दामजद" महाक्षत्रप हुआ इसकी मुद्राओं पर "दामघसद" व "दामजदश्री" का लेखांकन मिलता है। इसके सिक्के रूद्रदामन के सिक्कों के ही भाँति हैं। एक मुद्रा पर "वृद्ध राजा" का अंकन मिलता है। अधिक सम्भव है कि दामजद ने अधिक उम्र में शासन भार ग्रहण किया था। इसके पश्चात जीवदामन के सिक्के विशिष्टता लिए हुए हैं, इन मुद्राओं पर "शक संम्वत" में तिथि का भी अंकन किया गया है। सिक्कों के अग्रभाग पर राजा का अंकन किया गया है। सिक्कों के अग्रभाग पर राजा की आवक्ष आकृति है तथा इसके पीछे शक संम्वत का अंकन है। पृष्ठभाग पर चैत्य के चित्रांकन के साथ ब्राह्मी लिपि में "राज्ञो महाक्षत्रपस दामजद श्रीयपुत्रस राज्ञो महाक्षत्रपस जीवदामन" लेखांकित है। जीवदामन ने चाँदी के अतिरिक्त पोटीन के भी सिक्के जारी किये। रूद्रसिंह के सिक्कों पर 103 शक संम्वत का अंकन मिलता है। ब्राह्मी लिपि में "राज्ञोमहाक्षत्रपस रूद्रदामन पुत्रस राज्ञो महाक्षत्रप रूद्रसिंहस" लेखांकित है।

पश्चिमी क्षत्रपों की अधिकांश मुद्रायें चाँदी की हैं। इन पर हिन्द–यवन राजाओं विशेष कर अपोलोडोटस के चाँदी के सिक्कों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। चाँदी के अतिरिक्त ताँबा, सीसा

तथा पोटीन के सिक्के भी इनके द्वारा जारी किये गये। सातवाहनों के प्रभाव के कारण शकों की पोटीन निर्मित मुद्रायें आकार में छोटी हैं। पश्चिमी क्षत्रपों के सिक्कों का अग्रभाग हिन्द–यवन शासकों की मुद्राओं से समानता रखता है। पृष्ठभाग ब्राह्मी व खरोष्ठी लिपि में लेखांकित है, लेकिन चष्टन के बाद सिक्कों पर खरोष्ठी लिपि में लेखांकन समाप्त हो गया। जीवदामन के समय से सिक्कों पर तिथि का अंकन होने लगा। इनके सिक्कों पर तिथि अंकन तब तक चलता रहा जब तक चन्द्रगुप्त द्वितीय ने 400 ई. में रूद्रसिंह तृतीय को पराजित करके, शक साम्राज्य पर अधिकार करके, शक मुद्राओं का प्रचलन बन्द नहीं करवा दिया। पश्चिमी क्षत्रपों के चाँदी के सिक्कों के पृष्ठभाग पर अर्द्धचन्द्र, तारे, लहरदार लाइनें, चैत्य, विन्दु समूह, राजा का उपाधि सहित नाम का अंकन मिलता है। ताँबे की मुद्राओं के अग्रभाग पर गज, वज्र, त्रिशूल घोड़ा, वृषभ, कुठार, वाण तथा पृष्ठभाग पर घेरे में वृक्ष, स्तम्भ शीर्ष, चैत्य, तारे आदि का चित्रांकन राजा तथा उसकी उपाधि के साथ मिलता है।

## पह्लव मुद्रायें :–

शकों तथा पह्लवों का इतिहास बहुत उलझा हुआ है। पह्लव मूलतः पार्थिया के निवासी थे। पार्थियन साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक मिथ्रदात प्रथम था, जिसका शासन काल 171 ई.पू. से 131 ई.पू. के मध्य था। मिथ्रदात द्वितीय (123 ई.पू. से 88 ई.पू. तक) इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक सिद्ध हुआ। उसने शकों को परास्त करके सीस्तान तथा कान्धार जीत लिया। भारत पर आक्रमण करने वाले सरदार मूलतः सीस्तान या अराकोसिया के ही थे, जिन्हें भारतीय ग्रन्थों में पह्लव कहा गया है। पह्लव शासक बोनान या वोनोनीज के चाँदी तथा ताँबे के सिक्के प्राप्त हुए हैं। इसने अपने सिक्कों पर "महाराजाधिराज" की उपाधि अंकित करवायी। इसके कुछ सिक्के हिन्द–यवन शासक यूक्रेटाउडीज की मुद्राओं के अनुकरण पर बनाये गये हैं, जिन पर यूनानी तथा खरोष्ठी दोनों ही लिपियों में लेख मिलते हैं। चाँदी की मुद्राओं के अग्रभाग पर घोड़े

पर सवार राजा का अंकन मिलता है। यूनानी लिपि में "बेसिलियस बेसिलिओन" के साथ "बोनान" लेखांकित है। पृष्ठभाग में हाथ में वज्र लिए जुपिटर का चित्रांकन है। खरोष्ठी लिपि में "महाराज भ्रातस ध्रमिअस शालहोरस"[44] लेखांकित है। कुछ अन्य चाँदी की मुद्राओं के पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि में "स्पलहोर पुत्रस ध्रमिअस स्पलमदम"[45] लेखांकित है। ताबें के चौकोर सिक्कों के अग्रभाग पर ग्रीक देवता हरक्यूलिस तथा पृष्ठभाग पर देवी पल्लस का चित्रांकन है।[46] तक्षशिला से प्राप्त स्पलहोर तथा स्पलगदम के सिक्कों के आधार पर मार्शल तक्षशिला को इनके शासन क्षेत्र के अन्तर्गत मानते हैं। डॉ. चट्टोपध्याय स्पलहोर को बोनान का भाई स्वीकार करते हैं। सम्भवतः स्पलगदम इसका भतीजा था। वोनोनीज के बाद स्पेलिरिसस तांबे तथा चाँदी के सिक्के जारी किये। इन सिक्कों पर प्रमुख रूप से भाला लिये हुए राजा, सिंहासन पर बैठे हुए जुपिटर तथा अश्वारूढ़ राजा का अंकन मिलता है। इसकी कुछ मुद्राओं के अग्रभाग पर यूनानी लिपि में "वैसिलियस अडेल्फाय स्पलिरिसाय" तथा पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि में "महरजसुतध्रमियस स्पलिरियस"[47] लेखांकित है। कुछ सिक्कों पर स्पलिरिसस का नाम "अय" के साथ प्राप्त होता है। डॉ. चट्टोपध्याय ने अय का तादात्म्य तक्षशिला के शासक अय प्रथम से बैठा कर, अय को स्पलिरिसस का सहायक शासक बताया है। लेकिन अय की मुद्राओं से पता चलता है कि वह उपराजा के स्तर से उठकर स्वतन्त्र शासक बना। इसके द्वारा जारी मुद्राओं पर यूनानी व खरोष्ठी लिपि में लेखांकन भी मिलता है। "महरजस रजरजस महतस अयस"[48] लेखांकन उसके स्वतन्त्र सत्ता का द्योतक है। अय के पश्चात "अयनिष" नामक शासक के सिक्के प्राप्त होते हैं। पृष्ठभाग पर यूनानी देवी, शूलधारी सैनिक, लक्ष्मी तथा नगर देवता का चित्रांकन प्राप्त होता है। इसके उपरान्त भारतीय पह्लव राजाओं में सर्वाधिक ख्याति अर्जित करने वाला शासक गोण्डोफर्नीज था, इसे सिक्कों में गदफर, गुदफर तथा उसके अभिलेख में गुदुव्हर[49] मिलता है। गोण्डोफर्नीज का एक सिक्का जो चाँदी का है, ब्रिटिश म्यूजियम में सुरक्षित है। इस सिक्के के अग्रभाग पर

गोण्डोफर्नीज की आवक्ष आकृति ईरान के अर्षक वंशीय शासकों के मुकुट को धारण किये चित्रांकित है। पृष्ठभाग पर राजदण्ड लिए सिंहासनारूढ़ राजा को निके द्वारा मुकुट पहनाते दर्शाया गया है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओस बेसिलिओन मेगाउ गोण्डोफरीत आटोक्रेटर"[50] लेखांकित है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने उपरोक्त शैली के सिक्के अपने प्रारम्भिक शासन काल में ईरान के पूर्वी देशों में जारी किया। भारतीय प्रदेशों के लिए उसने मिश्रित धातु तथा तांबे के सिक्के जारी किये। इसके द्वारा जारी किये गये अन्य सिक्कों के अग्रभाग पर घोड़े पर सवार राजा को दाहिना हाथ आगे किये हुए दिखाया गया है। यूनानी लिपि में "बेसिलिओस बेसिलिओन मेगालाउ उण्डोफ" लेखांकित है। पृष्ठभाग पर बांये हाथ में राजदण्ड लिए दाहिना हाथ बाहर निकाले जियस चित्रांकित है। खरोष्ठी लिपि में "महरजस रजतिरजस त्रतर देवव्रत गुदुफरस" लेखांकित है।[51] इसके सिक्कों पर प्रायः देवव्रत का अंकन मिलता है लेकिन इस शब्द का प्रयोग किस भाव से किया गया था इसका निश्चित पता नहीं है।[52] गोण्डोफर्नीज के सिक्कों के अग्रभाग पर सामान्तया अश्वारूढ़ राजा, यूनानी लिपि में उसका नामांकन पृष्ठभाग पर देवी पल्लस या जुपिटर के चित्रांकन के साथ खरोष्ठी लिपि में लेख मिलता है। गोण्डोफर्नीज के बाद पार्थियन साम्राज्य पतित होता चला गया। प्रथम शताब्दी ई. में किसी समय कुषाणों के उत्थान के साथ पश्चिमी उत्तर भारत में से शक–पह्लव शासकों का प्रभुत्व समाप्त हो गया।[53]

## कुषाण कालीन मुद्रायें :–

कुषाण साम्राज्य तत्कालीन विश्व के तीन बड़े साम्राज्यों–रोम, पार्थिया तथा चीन के समकक्ष था। कुषाण चीन के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाली यू–ची जाति की एक शाखा थे। जातीय संघर्ष के कारण यू–ची अथवा कुषाण सुदूर पश्चिम की ओर बढ़े। यू–ची कबीले के सरदार कुजुल कडफिसेस (15 ई.से 65 ई. तक) ने शकों से ताहिया (बैक्ट्रिया) का क्षेत्र जीत

लिया। इसने अन्तिम यूनानी शासक हरमेयस को हटाकर काबुल तथा कश्मीर पर कुषाण वंश की स्थापना की। कुजुल कडफिसेस ने अपने तांबे के सिक्कों पर एक ओर हरमेयस की आकृति उत्कीर्ण करवायी तथा "महाराजाधिराज" की उपाधि भी धारण की । कुजुल कडफिसेस के उपरान्त विम कडफिसेस तथा कनिष्क कुषाण साम्राज्य के महत्वपूर्ण शासक हुए। कुषाण साम्राज्य के शासकों ने विविध शैलियों के सिक्के जारी करके अपने पूर्ववर्ती अथवा परवर्ती राजवंशों को पीछे छोड़ दिया। कुषाणों ने सोने तथा तांबे की मुद्रायें जारी कीं। कुषाणों के समय भारत तथा रोम के मध्य अच्छे व्यापारिक सम्बन्ध थे। भारतीय व्यापारी अपने सामग्रियों के साथ रोम जाते थे, इसके बदले में रोम के सिक्के भारत आते थे। इसकी सूचना "पेरिप्लस ऑफ द ईरीथ्रियन सी" नामक ग्रन्थ से मिलती है। प्लिनी ने भी लिखा है कि रोम की लगभग पाँच करोड़ मुद्रायें प्रतिवर्ष भारत जाती थीं। इससे स्पष्ट होता है कि रोम से भारत में सोने का आयात पर्याप्त मात्रा में होता था। कुषाणों ने भी अपनी स्वर्ण मुद्राओं की तौल डेनेरियस नामक रोमन सिक्कों के आधार पर 124 ग्रेन निर्धारित की।[54] स्वर्ण मुद्राओं का प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए होता था। दैनिक उपयोग के लिए ताम्र मुद्राओं का उपयोग अधिक था। कुषाण मुद्राओं पर राजा को लम्बे कोट, पायजामा, उँचे बूट धारण किये हुए वेदी पर आहुति देते हुए दर्शाया गया है। इनके सिक्कों पर यूनानी तथा खरोष्ठी लिपि में लेखांकन भी मिलता है। अधिक सम्भव है कि इन सिक्कों पर दर्शायी गयी वेश–भूषा पर्शियन सिक्कों से ग्रहण की गयी होगी। कुजुल कडफिसेस तथा विम कडफिसेस के सिक्कों पर देवी–देवताओं की अंकन सीमित है लेकिन हुविष्क के समय यह परम्परा चरम सीमा पर थीं। कुषाणों ने अपनी मुद्राओं के पृष्ठभाग यूनानी, रोमन, ईरानी तथा भारतीय देवी–देवताओं को चित्रांकित करवाया। यूनानी तथा रोमन देवी–देवताओं में हेराक्लीज–शौर्य का प्रतीक, हेलियोस– सूर्य का प्रतीक, सलीन –चन्द्र देवता, हिफेस्ट्रोस– अग्निदेवता, जियस–आकाश देवता, उरेनस– जल देवता, रिओम– नगर देवी तथा सेरपिस– यम

देवता के समान था, का अंकन कुषाण मुद्राओं पर सामान्तया मिलता है। उपरोक्त रोमन तथा यूनानी देवताओं के अतिरिक्त कुषाण मुद्राओं पर ईरानी देवी–देवताओं जैसे– मिहिर– सूर्य देवता, माओ– चन्द्र देवता, फैरो तथा अथशो– अग्नि देवता, ओयडो– वायुदेवता, लुहरैस्य– प्रकाश देवता, अहुरमज्दा– जल देवता, शाओ शोरो – युद्ध देवता, अरदोक्षो– वैभव एवं समृद्धि का प्रतीक, का चित्रांकन मिलता है।[55] कुजुल कडफिसेस ने चाँदी तथा ताँबे के सिक्के जारी किये, इसके प्रथम प्रकार के सिक्के हेराक्लीज तथा हरमेयस के हैं, जिनके अग्रभाग पर मुकुटधारी हरमेयस की आवक्ष आकृति चित्रांकित है।[56] यूनानी लिपि में "वेसिलियोस सोटेरोस एरमायउ" लेख मिलता है। पृष्ठभाग पर हेराक्लीज का चित्रांकन है, जिसके बांयें हाथ में सिंह–चर्म तथा दाहिने हाथ में जमीन पर टिका मुग्दर दर्शाया गया है। खरोष्ठी लिपि में "कुजुल कसस कुघण यवुगस ध्रमथिदस" लेखांकित है।[57] इसकी अन्य प्रकार की मुद्राओं के अग्रभाग पर मुकुटधारी हरमेयस के चित्रांकन के साथ यूनानी लिपि में "कोजोलो कादफिजोउ कोशोनोउ" लेखांकन मिलता है। पृष्ठभाग पर हेराक्लीज के चित्रांकन के साथ प्राकृत भाषा में "कुजुल कसस कुसान यवुगस धर्मठिदस" लेखांकित है।[58] अनुमानतः काबुल की विजय के पश्चात कुजुल ने अन्तिम यूनानी शासक हरमेयस के साथ मिलकर शासन किया होगा। यह भी हो सकता है कि प्रचलित यूनानी मुद्राओं के अनुकरण पर अथवा युनानी मुद्राओं को ही अपने नाम से अंकित करवा कर जारी किया होगा। टार्न तथा कनिंघम हरमेयस तथा कुजुल कडफिसेस के मध्य वैवाहिक सम्बन्ध होने की सम्भावना व्यक्त करते हैं। कुजुल कडफिसेस के कुछ सिक्कों के अग्रभाग पर मुकुट धारण किये राजा का सिर चित्रांकित है। यह सिक्का रोमन सम्राट आगस्टस के सिक्कों का अनुकरण प्रतीत होता है। इस सिक्के के अग्रभाग पर यूनानी लिपि में "खोरनसउ जओउ कुजुल कडफिसस" लेखांकित है पृष्ठभाग पर सिंहासनारूढ़ राजा के अंकन के साथ खरोष्ठी लिपि में "…. .कफसस सच ध्रमथितस कुषनस यवुअस" लेखांकित है।[59] इसी प्रकार के कुछ सिक्कों के

पृष्ठभाग पर निके का चित्रांकन है। कुजुल द्वारा जारी कुछ ऐसी मुद्रायें प्राप्त होती हुई हैं, जिन पर कुजुल कडफिसेस का "महाराजराजातिराज"[60] की उपाधि के साथ अंकन मिलता है। इन सिक्कों के दोनों भागों पर कूबड़दार ऊँट तथा अग्रभाग पर 'नन्दिपद' व पृष्ठभाग पर "महारायस रामरायस देवपुत्रस कुजुल–करा कफसस" लेखांकित है।[61]

कुजुल कडफिसेस के बाद विम कडफिसेस ने कुषाण साम्राज्य की बागडोर सम्भाली। इसने चाँदी तथा ताँबे के सिक्कों के अतिरिक्त सोने के सिक्के भी जारी किये। बस्तुतः हिन्द–यवन शासकों ने स्वर्ण सिक्कों की जो परम्परा प्रारम्भ की थी उसके सुप्रचलन का श्रेय विम कडफिसेस को ही है। विम ने भी कुजुल कडफिसेस की भाँति यूनानी खरोष्ठी लिपि तथा यूनानी–प्राकृत भाषा का प्रयोग अपने सिक्कों पर किया। विम कडफिसेस के समय तक पूर्व प्रचलित शक और पह्लवों के चाँदी के सिक्कों में अत्याधिक मिश्रण होने लगा था, उनमें चाँदी की मात्रा मात्र 20% ही रह गयी थी। यह पहला विदेशी शासक था, जो पूर्णरूपेण भारतीय संस्कृति से प्रभावित हुआ। इसने अपने सिक्कों पर आदि देव शिव को चित्रांकित करवाया। विम कउफिसेस की चाँदी की कुछ मुद्रायें ब्रिटिश म्यूजियम में सुरक्षित हैं, जिनके पृष्ठभाग पर घुड़सवार का चित्रांकन है और यूनानी लिपि में "बेसिलियस बेसिलिओन सोतेर मेगास" लेखांकित है। पृष्ठभाग पर जियस की आकृति के साथ खरोष्ठी लिपि में "महाराजस राजातिराजस कजात सत्रादातस" लेखांकित है। इस संदर्भ में यह संकेत किया जा सकता है कि विम कडफिसेस के साथ कुषाण सिक्कों पर द्विभाषिक प्रयोग सदा के लिए समाप्त हो गया।[62] इसके ताम्र सिक्कों पर राजा की आवक्ष आकृति, घुड़सवार तथा जियस के अंकन के साथ "सोतेर मेगास" लेखांकित है। सोटर मेगस विम था या अन्य कोई शासक निश्चित नहीं है, लेकिन बनावट व तकनीकि दृष्टि से "सोतेर मेगास" लेखांकन के सिक्के विम कडफिसेस के ही माने जा सकते हैं।[63]

विम कडफिसेस का उत्तराधिकारी होने के कारण कनिष्क द्वारा जारी मुद्रायें विम की मुद्राओं से प्रभावित थीं। कनिष्क द्वारा जारी सोने व ताँबे की मुद्राओं पर विभिन्न धर्मों के देवी–देवताओं का चित्रांकन प्राप्त होता है। उसकी प्रारम्भिक मुद्राओं पर यूनानी देवताओं का अंकन है, उसके बाद क्रमशः ईरानी, भारतीय देवता शिव तथा महात्मा बुद्ध का अंकन प्राप्त होता है। कनिष्क के स्वर्ण सिक्कों के अग्रभाग पर राजा लम्बी कोट, शलवार, कमरबन्द तथा गोल टोपी धारण किये हवन कुण्ड में आहुति दे रहा है।[64] यह सभी स्वर्ण मुद्राओं की सामान्य विशेषता रही है। पृष्ठभाग पर अनेक देवी–देवताओं का चित्रांकन है। जिन सिक्कों के अग्रभाग पर यूनानी लिपि में "बेसिलियस बेसिलिओन कनिष्को" लेखांकित है, उन सिक्कों के पृष्ठभाग पर यूनानी सूर्य देवता हेलियस, यूनानी चन्द्र देवता सेलेन, यूनानी अग्निदेवता हेफेस्टास का अंकन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त जिन मुद्राओं के अग्रभाग पर यूनानी लिपि तथा शक भाषा में "शाओ नानो शाओ कनिष्की"[65] लेखांकित है, उन सिक्कों के पृष्ठभाग पर ईरानी अग्नि देवता अथशो, ईरानी समृद्धि एवं वैभव की देवी आरदोक्षो, ईरानी प्रकाश देवता लुहरैस्प, ईरानी सूर्य देवता मिहिर, ईरानी वायु देवता ओडो आदि का चित्रांकन प्राप्त होता हैं उल्लेखनीय है कि कनिष्क के विशाल साम्राज्य के विभिन्न प्रान्तों में भिन्न–भिन्न धार्मिक परम्पराओं के लोग रहते थे। सम्बन्धित भू–क्षेत्र की धार्मिक परम्परा के अनुरूप मुद्राओं पर विविध अंकन करवाया गया होगा। कनिष्क के उपरान्त हुविष्क जब कुषाण साम्राज्य का शासक बना तो उसने जो मुद्रायें जारी की उसके पृष्ठभाग पर कनिष्क से भी अधिक देवी–देवताओं का अंकन करवाया। हुविष्क की स्वर्ण मुद्राओं पर उसका वामाभिमुख आवक्ष अंकन मिलता है। इन सिक्कों पर वह मणि–मण्डित वस्त्र गोल शिरस्त्राण धारण किये हुए दर्शाया गया है। 1963 में बारांबकी से 13 सोने के सिक्के प्राप्त हुए यह सभी हुविष्क के हैं।[66] हुविष्क के कुछ सिक्कों पर उसे दक्षिणाभिमुख रूप में भी दर्शाया गया है जिसके दाहिने हाथ में गदा या राजदण्ड तथा बांयें हाथ में भाला का अंकन है।[67] कुछ मुद्राओं पर उसे गजारूढ़, दाहिने

हाथ में भाला लिए हुए चट्टान या बादल पर पद्मासन मुद्रा में बैठा प्रदर्शित किय गया है।[68] इन सभी में मुद्रालेख "शाओ नानो शाओ ओवेश्की कुषानो"[69] अपरिवर्तित है। पृष्ठभाग पर अथशो, अरदोक्षो, माओ, मिहिर, नना, फैरो व भारतीय देवी–देवताओं का अंकन प्राप्त होता है। कनिंघम के अनुसार हुविष्क की स्वर्ण मुद्राओं पर राजा के आवक्ष आकृति के चार भिन्न–भिन्न प्रकार हैं।[70] प्रथम प्रकार के सिक्को में राजा मुकुट, शिरस्त्राण तथा कानों मे कुण्डल धारण किये दर्शाया गया है, जिसके कन्धों से ज्वालों प्रस्कुटित होती दर्शायी गयी हैं।[71] दूसरी प्रकार की मुद्राओं पर प्रभामण्डल युक्त राजा मुकुट तथा कढ़ा हुआ कोट धारण किये चित्रांकित है, जिसके दाहिने हाथ में भाला तथा बांयें हाथ में अंकुश है। तीसरी प्रकार की मुद्रा में प्रभामण्डल युक्त राजा नुकीले शिरस्त्राण एवं कवच युक्त कोट तथा अंगरखा धारण किये चित्रांकित है जिसके दाहिने हाथ में भाला तथा बांयें हाथ में सिंहस्तम्भ है, जिस पर फीता लटक रहा है। चौथी प्रकार की मुद्राओं पर राजा राजसी वेश–भूषा में बादलों से निकलता हुआ दर्शाया गया है। इसके बांयें हाथ में राजदण्ड तथा दाहिने हाथ में गदा है जिसका आकार मुख की तरह है। उपरोक्त प्रकारों के पृष्ठभाग पर मिहिरों, माओ, मनाबेगो, मिरो व माओ (आमने सामने मुख किये) इसी मुद्रा में नाना व ओइशो तथा कार्नकोपिया लिए देवी आरदोक्षो, शाओ सोरो, रिओ, सेरपिस, उरेनस आदि देवी–देवताओं का नाम सहित चित्रांकन है। कनिंघम ने हुविष्क द्वारा जारी मुद्राओं को तीन भागों में बांटा है। प्रथम प्रकार के अग्रभाग पर राजा गजारूढ़ है, दूसरे प्रकार में राजा सुसज्जित आसन पर आसीन है और तृतीय प्रकार की मुद्रा पर राजा भारतीय मुद्रा में कुषन पर पल्थी मार कर बैठा हुआ दर्शाया गया है। इन तीनों प्रकार की ताम्र मुद्राओं के पृष्ठभाग पर उन्हीं देवी–देवताओं की आकृतियों का अंकन है, जिनका उल्लेख उसकी स्वर्ण मुद्राओं के अन्तर्गत किया जा चुका है। उपरोक्त मौद्रिक विशेषताओं के आधार पर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि हुविष्क एक शक्ति सम्पन्न सम्राट था। हुविष्क के बाद वासुदेव सिंहासन रूढ़ हुआ।

1971 में गढ़वाल निधि से 45 सोने के सिक्के प्राप्त हुए जिसमें एक सिक्का वासुदेव का था शेष हुविष्क के सिक्के थे।[72] पंजाब तथा उत्तरपश्चिमी भारत से प्राप्त मुद्रायें कनिष्क तथा हुविष्क की मुद्राओं से समानता रखती हैं। पेशावर मुद्रा निधि से वासुदेव की बहुसंख्यक मुद्रायें प्राप्त हुई हैं। यद्यपि कुछ स्वर्ण मुद्राओं, विशेषकर ताम्र मुद्राओं पर मौद्रिक ह्यस के लक्षण दृष्ठिगोचर होते हैं।

कुषाण वंश के अन्य शासकों की सोने व ताँबे की मुद्रायें भी प्राप्त हुई हैं। हिसार के मीत्ताथल नामक स्थान से एक खेत से 86 सिक्के मिले हैं, इनमें समुद्रगुप्त व काच के सिक्कों के साथ 25 सिक्के वासुदेव, कनष्कि तृतीय, वसु, छु, षक नामांकित हैं।[73] कनिष्क तृतीय की मुद्राओं की विशेषता यह थी कि अग्रभाग पर ब्राह्मी अक्षरों में प्रान्तीय शासकों के संक्षिप्त नाम लेखांकित हैं, जैसे – वासु (देव), विरू (पाक्ष), मही (श्वर) आदि। सिक्कों के इसी भाग पर राजा की खड़ी आकृति बांयीं ओर वि, सि, मृ, आदि अक्षर प्राप्त होते हैं। अधिक सम्भव है कि यह प्रान्तीय शासकों के नामों के प्रथम अक्षर हों। अन्य मुद्राओं पर प, न, ग, चु, खु, थ, वै आदि लेखांकित हैं। इस विषय पर अल्टेकर का मानना है कि उपरोक्त अक्षर सिक्कों के निर्माण स्थल के सूचक या उन जातियों अथवा प्रान्तों के नाम के बोधक प्रथम अक्षर हैं, जिनमें यह सिक्के प्रचलित थे जैसे– प से पुरूषपुर, ग से गान्धार का बोध होता है।

## हूण मुद्रायें :–

हूण चीन की सीमा पर रहने वाली एक बर्बर जाति थी। हूणों की एक शाखा ने पाँचवी शताब्दी में ईरान तथा भारत पर आक्रमण कर दिया। हिन्दुकुश को पार करके हूणों ने गान्धार पर अधिकार कर लिया और वे गुप्त साम्राज्य की ओर बढ़ने लगे। फलतः गुप्त सम्राट स्कन्दगुप्त ने हूणों को 455–467 ई. के मध्य बुरी तरह पराजित किया, जिसका उल्लेख स्कन्दगुप्त के अभिलेख में करते हुए कहा गया है कि "हूणैर्यस्य समागतस्य समरे दोर्भ्या धराकम्पिता"[74], लेकिन हूणों ने

स्कन्दगुप्त की मृत्यु के उपरान्त पांचवी शताब्दी के अन्त तथा छठी शताब्दी के प्रारम्भ में पश्चिमी भारत व मालवा पर अधिकार कर लिया, जिसका नेतृत्व तोरमाण ने किया। इसके पुत्र मिहिरकुल ने उत्तर भारत पर अपने राज्य का विस्तार करके शाकल को राजधानी बनाया। हूणों ने अपने द्वारा विजित प्रान्तों की मुद्रा शैलियों के अनुकरण पर ही मुद्रायें जारी कीं। अफगानिस्तान में उन्होंने ससैनियन सिक्कों का अनुकरण किया, कश्मीर में परवर्ती कुषाणों तथा शेष प्रदेशों में गुप्तों की मुद्रा परम्परा को अपनाया। इस प्रकार मुद्रा निर्माण के क्षेत्र में हूणों का विशेष योगदान नहीं था। उन्होंने चाँदी तथा तांबे के सिक्कों का निर्माण करवाय। तोरमाण द्वारा जारी 38 ग्रेन की एक रजत मुद्रा के अग्रभाग पर वामाभिमुख राजा की आवक्ष आकृति का चित्रांकन किया गया है, इसके सम्मुख 52 की तिथि उत्कीर्ण की गयी है, पृष्ठभाग पर पंख फैलाये मयूर के चित्रांकन के साथ ब्राह्मी लिपि में "विजितावनिखनिपतिः श्री तोरमाण दिवं जयति" लेखांकित है।[75] तोरमाण के ताम्र सिक्कों का भार 39.4 ग्रेन से 64.67 ग्रेन के मध्य है। ताम्र सिक्के पूर्वी पंजाब और राजस्थान में प्राप्त हुए हैं। इन मुद्राओं के अग्रभाग ससैनियन राजमुण्ड का अंकन है। पृष्ठभाग पर सूर्य, चन्द्र तथा राजा का नाम तोर या जबुल लेखांकित है।[76] मिहिरकुल ने भी ससैनियन अनुकरण पर रजत मुद्राओं का निर्माण करवाया। मिहिरकुल की एक रजत मुद्रा 54.2 ग्रेन की प्राप्त हुई है, जिसके अग्रभाग पर आभूषण धारण किए राजा की आवक्ष आकृति का अंकन है, जिसके सम्मुख वृषभ, त्रिशूल का अंकन तथा "जयतु मिहिरकुल" या "जयतु वृष" लेखांकित है। पृष्ठभाग पर ससैनियन अग्निवेदी है।[77] मिहिरकुल ने ताम्र मुद्रायें भी जारी कीं। इसके द्वारा जारी 38.6 ग्रेन की ताम्रमुद्रायें ससैनियन प्रकार की हैं, जिनके अग्रभाग पर राजा की आवक्ष आकृति और ब्राह्मी लिपि से "श्री मिहिरकुल" लेखांकित है तथा पृष्ठभाग पर कूबड़दार वृषभ का चित्रांकन है और "जयतु वृषः" लेखांकित है।[78] मिहिलकुल की ही एक अन्य ताम्र मुद्रा का वजन 116.9 ग्रेन है, जो परवर्ती कुषाण–मुद्राओं के अनुकरण पर निर्मित की गयी है। इसके अग्रभाग पर राजा के

चित्रांकन के साथ "श्री मिहिरकुल" लेख अंकित है। पृष्ठभाग पर कमल लिए आरदोक्षो देवी की भद्दी आकृति का चित्रांकन किया गया है।[79] मिहिरकुल के पश्चात उत्तरी पश्चिमी भारत के एक भाग पर कुछ हूण शासक अपनी सत्ता बनाये रहे। उन्होंने ससैनियन प्रकार के सिक्के जारी किये। ऐसे राजाओं में खिंगिल, उदयादित्य और नरेन्द्रादित्य के नाम लिये जा सकते हैं।

# सन्दर्भ


1. अजीत रायजादा – "भारतीय सिक्कों का इतिहास", पृष्ठ–20।

2. एच.एल. हट्टन – "जे एन एस आई, जिल्द –4", पृष्ठ –146।

3. आर.बी. ह्वाइट हेड – "कैटलॉग ऑफ क्वाइन्स इन द पंजाब म्यूजियम लाहौर", वल्यूम ए, इण्डो–ग्रीक क्वाइन्स, पृष्ठ –9; तुलनीय –स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –7–8।

4. आर.बी ह्वाइट हेड – "कैटलॉग ऑफ इन्डोग्रीक क्वाइन्स, वल्यूम – ए, पृष्ठ –10; तुलनीय –स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –7–8।

5. उपरिवत् – पृष्ठ–10; तुलनीय – ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमत, पृष्ठ –12; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –8–9।

6. उपरिवत्, पृष्ठ–11; तुलनीय – ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –8–9।

7. उपरिवत्, पृष्ठ–12 ; तुलनीय – पी.एल. गुप्ता – भारत के पूर्व–कालिक सिक्कें, पृष्ठ –110–112; ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –9।

8. आर.बी. ह्वाइटहेड – कैटलॉग ऑफ इन्डो ग्रीक क्वाइन्स, वाल्यूम – ए पृष्ठ–13; तुलनीय – पी.एल. गुप्ता – भारत के पूर्व–कालिक सिक्कें, पृष्ठ –110–112;

ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –9।

9. उपरिवत् – पृष्ठ–14; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12।

10. उपरिवत् – पृष्ठ–15; तुलनीय ––ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12।

11. उपरवित् – पृष्ठ–18।

12. आर.बी. ह्वाइटहेड –कैटलॉग ऑफ इन्डोग्रीक क्वाइन्स; वाल्यूम ए पृष्ठ –14; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12।

13. उपरिवत् – पृष्ठ –16; तुलनीय –स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –10।

14. उपरिवत् – पृष्ठ –17; तुलनीय – ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –10।

15. उपरिवत् – पृष्ठ –17; तुलनीय – ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12।

16. आर.बी. ह्वाइटहेड – कैटलॉग ऑफ द इन्डो–ग्रीक क्वाइन्स, वाल्यूम–पए पृष्ठ –16; तुलनीय – ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –12।

17. उपरिवत् – पृष्ठ –20; तुलनीय – पी.एल. गुप्ता – भारत के पूर्व–कालिक सिक्कें, पृष्ठ –114–115; ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –13; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –11–13।

18. उपरिवत् – पृष्ठ –21; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –13; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –11–13।

19. उपरिवत् – पृष्ठ –26; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –13; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –11–13; पी.एल. गुप्ता – भारत के पूर्व–कालिक सिक्कें, पृष्ठ –114–115।

20. उपरिवत् – पृष्ठ –29; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –13; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –13–14।

21. उपरिवत् – पृष्ठ –27; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –13; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –13–14।

22. आर.बी. ह्वाइटहेड – "कैटलॉग ऑफ द इन्डो–ग्रीक क्वाइन्स, वाल्यूम– ए पृष्ठ –30; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –14; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –14–15।

23. उपरिवत् – पृष्ठ –32; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –14।

24. उपरिवत् – पृष्ठ –33; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –14।

25. उपरिवत् – पृष्ठ –54; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –16; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –22।

26. उपरिवत् – पृष्ठ –59; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –16; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –26।

27. आर.बी. ह्वाइटहेड – "कैटलॉग ऑफ द इन्डो–ग्रीक क्वाइन्स, वायल्यूम. पृष्ठ –61; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –16।

28. उपरिवत् – पृष्ठ –68।

29. उपरिवत् – पृष्ठ –74; तुलनीय –स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –30।

30. उपरिवत् – पृष्ठ –82; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –19; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –32।

31. उपरिवत् – पृष्ठ –84।

32. उपरिवत् – पृष्ठ –98; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –20; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –38–39।

33. उपरिवत् – पृष्ठ –98; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –20; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –38–39।

34. उपरिवत् – पृष्ठ – 100; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –20; स्मिथ – क्वाइन्स ऑफ एन्शियन्ट इन्डिया, पृष्ठ –38–39

35. डी.सी. सरकार – सेलेक्ट इन्शक्रिप्शन्स – पृष्ठ –114–120।

36. कनिंघम – "क्वाइन्स ऑफ द शकाज", पृष्ठ –26।

37. अजीत रायजादा – "भारतीय सिक्कों का इतिहास", पृष्ठ –56।

38. उपरिवत् – पृष्ठ –50।

39. उपरिवत् – पृष्ठ –54।

40. पी.एल. गुप्ता – जे एन एस आई, जिल्द–28 (प), पृष्ठ –220–221।

41. डी. सी. सरकार – जे.एन.एस.आई, जिल्द–14, पृष्ठ –20–21।

42. अजीत रायजादा – "भारतीय सिक्कों का इतिहास", पृष्ठ –54।

43. उपरिवत् – पृष्ठ –54।

44. आर.बी. ह्वाइटहेड – "कैटलॉग ऑफ द इण्डोग्रीक क्वाइन्स," वाल्यूम –ए पृष्ठ –141।

45. उपरिवत् – पृष्ठ –142।

46. उपरिवत् – पृष्ठ –124।

47. ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –24।

48. आर.बी. ह्वाइटहेड – कैटलॉग ऑफ द इण्डोग्रीक क्वाइन्स, वाल्यूम–च.ए पृष्ठ –122।

49. डी.सी. सरकार – सेलेक्ट इन्सक्रिप्शन्स्, च–125–126।

50. पी.एल. गुप्ता – "भारत के पूर्व–कालिक सिक्के", पृष्ठ –139।

51. आर.बी. ह्वाइटहेड – कैटलॉग ऑफ द इण्डोग्रीक क्वाइन्स, वाल्यूम– ि, पृष्ठ –146; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –27।

52. पी.एल. गुप्ता – "भारत के पूर्व–कालिक सिक्के", पृष्ठ –140।

53. उपरिवत् – पृष्ठ –141।

54. अजीत रायजादा – "भारतीय सिक्कों का इतिहास", पृष्ठ –62।

55. पी.एल. गुप्ता – "भारत के पूर्व–कालिक सिक्के", पृष्ठ – 211।

56. उपरिवत् – पृष्ठ –204।

57. आर.बी. ह्वाइटहेड – "कैटलॉग ऑफ द क्वाइन्स इन द पंजाब म्यूजियम", वाल्यूम– ि, पृष्ठ –128; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –29।

58. उपरिवत् – पृष्ठ – 179; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –29।

59. उपरिवत् – पृष्ठ –181, तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –29।

60. ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –29।

61. उपरिवत् – पृष्ठ–29।

62. पी.एल. गुप्ता – ″भारत के पूर्व–कालिक सिक्के″, पृष्ठ – 209।

63. उपरिवत् – पृष्ठ –208।

64. आर.बी. ह्वाइटहेड – ″कैटलॉग ऑफ द क्वाइन्स इन द पंजाब म्यूजियम″, वाल्यूम, ৮– पृष्ठ –186; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –31।

65. ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –31; तुलनीय –आर.बी. ह्वाइटहेड – ″कैटलॉग ऑफ द क्वाइन्स इन द पंजाब म्यूजियम″, वाल्यूम, ৮, पृष्ठ –187।

66. पी.एल.गुप्ता – ″भारत के पूर्व–कालिक सिक्के″, पृष्ठ –215।

67. ए.एस. अल्टेकर – ″जे.एन.एस.आई.″, जिल्द –14, पृष्ठ –71,72।

68. पी.एल.गुप्ता – ″भारत के पूर्व–कालिक सिक्के″, पृष्ठ –210।

69. आर.बी. ह्वाइटहेड – ″कैटलॉग ऑफ द कावाइन्स इन द पंजाब म्चूजिय″, वाल्यूम ৮– पृष्ठ –75; तुलनीय –ए.के. भट्टाचार्या – इन्डियन क्वाइन्स इन द म्यूज गोमेत, पृष्ठ –34।

70. कनिंघम – आई.एम.सी., वाल्यूम ৮, पृष्ठ –75।

71. अजीत रायजादा – "भारतीय सिक्कों का इतिहास", पृष्ठ –65।

72. पी.एल.गुप्ता – "भारत के पूर्व–कालिक सिक्के", पृष्ठ –215।

73. उपरिवत् – पृष्ठ –224।

74. डी.सी. सरकार – सेलेक्ट इन्सक्रिप्शन्स; ३, 321–324; (स्कन्दगुप्त का भितरी अभिलेख)

75. कनिंघम – "क्वा. मे. इ.", पृष्ठ –20।

76. स्मिथ – कै.क्वा.इ.म्यू., जिल्द, १, पृष्ठ –235–236।

77. डी.सी. सरकार – "स्टडीज इन इन्डियन क्वाइन्स", पृष्ठ –376।

78. स्मिथ – "कै. क्वा. इ. म्यू.", जिन्द, १, पृष्ठ –236।

79. उपरिवत् – पृष्ठ –237।